Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 SHISRRJ | Volume 7 | Issue 1
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

शिक्षक शिक्षा के संदर्भ में नवीन शिक्षण-अधिगम प्रकिया का अध्ययन

डॉ. संदीप कुमार यादव
सहायक प्रोफ़ेसर ,बीएड विभाग, शिब्ली नेशनल पी.जी.कालेज, आजमगढ़

Article Info

Publication Issue :
January-February-2024
Volume 7, Issue 1

Page Number : 209-217

Article History
Received : 01 Feb 2024
Published : 15 Feb 2024

सारांश:
शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व में परिवर्तन लाने का माध्यम है, जिसमें उसके भीतर चिंतन, ज्ञान और आलोचनात्मक जांच विकसित होती है। शिक्षा के माध्यम से हम अपनी क्षमताओं को पहचान पाते हैं, जो हमारे समग्र विकास में हमारी मदद करती हैं। हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू में प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक प्रगति के वर्तमान समय में, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को बेहतर ढंग से समझने में नवीन दृष्टिकोण और अभ्यास बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह विशेष रूप से शिक्षक शिक्षा के संदर्भ में आवश्यक है, जो भविष्य के शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण के सभी भागों में कौशल-आधारित शिक्षा से संबंधित है, चाहे वह सैद्धांतिक हो या व्यावहारिक। इस पत्र का उद्देश्य शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में नवीन अभ्यासों के महत्व का पता लगाना और शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में इन नए विचारों या दृष्टिकोणों के उपयोग में आने वाली चुनौतियों या बाधाओं की पहचान करना है।
महत्वपूर्ण शब्द - शिक्षा, चिंतन, ज्ञानोदय, नवीन अभ्यास आदि।

परिचय:

शिक्षक शिक्षा संस्थान सबसे शक्तिशाली स्थान हैं जहाँ राष्ट्र का भविष्य बनाया जाता है। जब राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली मजबूत होगी, तभी यह देश के विकास में सहायक होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षक शिक्षा एक महत्वपूर्ण स्थान है जहाँ स्कूली शिक्षक अगली पीढ़ी को आकार देंगे। यह अखंडता और विश्वसनीयता के स्तर में सुधार करेगा और उस स्तर तक पहुँचने में सहायक होगा। लेकिन शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए हमारी शिक्षा प्रणाली में और सुधार की आवश्यकता है और इस संबंध में, यह समय की मांग है कि हमें पारंपरिक तरीकों के अलावा कुछ अन्य नवीन तरीकों या प्रथाओं को अपनाने की जरूरत है। पाठ्यक्रम और अन्य संबंधित डोमेन सहित शिक्षण-अधिगम के प्रत्येक पहलू में नवीन प्रथाओं का अनुप्रयोग महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में पारंपरिक दृष्टिकोण से हाइब्रिड या मिश्रित

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

दृष्टिकोण में बदलाव की जरूरत है। यह न केवल प्रभावी तरीके से शिक्षा प्राप्त करने में सहायक है, बल्कि विद्यार्थी के समग्र विकास में भी सहायक है।

नवीन प्रथाओं पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मुख्य विशेषताएं:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक शिक्षा में नवीन प्रथाओं पर भी जोर देती है। नीति बेहतर भागीदारी के साथ-साथ बेहतर सीखने के परिणामों के लिए शिक्षा में तकनीकी उपकरणों के विकास और समर्थन पर केंद्रित है। नीति बहु-विषयक दृष्टिकोण और एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों पर भी जोर देती है, जो अपने आप में नवीन शिक्षण सीखने के लिए एक आवश्यक तरीका दर्शाते हैं। NEP 2020 ने शिक्षण में अत्याधुनिक शिक्षाशास्त्र का उल्लेख किया। नीति संचार, सहयोग, टीम वर्क और लचीलापन जैसे जीवन कौशल पर ध्यान केंद्रित करती है। यह तार्किक निर्णय लेने, नवीन और समग्र शिक्षा को प्रोत्साहित करती है। नीति सभी स्थानीय और भारतीय भाषाओं में स्कूल और स्थानीय सार्वजनिक पुस्तकालयों को बढ़ावा देने की बात करती है जहाँ सभी स्तरों के छात्रों के लिए मनोरंजक और प्रेरणादायक पुस्तकें विकसित की जाएंगी। नीति इंटर्नशिप और कौशल विकास पर भी जोर देती है। इसलिए, उपर्युक्त मुख्य बातों से यह स्पष्ट है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षण सीखने में नवीन प्रथाओं को बढ़ावा दे रही है

नवीन अभ्यास:

व्युत्पत्ति की दृष्टि से, "नवाचार" शब्द लैटिन शब्द "इनोवेट" से लिया गया है जिसका अर्थ है कुछ नया या नई चीजों को विकसित करने और पेश करने का अभ्यास या कुछ नया पेश करना। यह परे सोचने और कुछ नया बनाने की क्षमता है जो पहले से मौजूद ज्ञान या जानकारी से अलग है। आविष्कार को बढ़ावा देने के लिए, शिक्षक शिक्षा और प्रशिक्षण में शिक्षण और सीखने के विभिन्न तरीकों के साथ नए विचारों की आवश्यकता होती है। यदि शिक्षक अपने शिक्षण में नवीन प्रथाओं का उपयोग करेंगे, तो यह शिक्षक शिक्षा में इंटरैक्टिव और दिलचस्प कक्षा लेनदेन और अन्य पाठ्यचर्या और सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों को बनाने में सहायक होगा। जैसा कि हम जानते हैं कि शिक्षण, सीखना और मूल्यांकन महत्वपूर्ण पहलू हैं। किसी भी शैक्षिक प्रक्रिया के लिए यह एक महत्वपूर्ण कदम है, इसलिए इस संदर्भ में कुछ नवीन प्रथाएं इस प्रकार हैं।

नवीन अभ्यास शिक्षण:

शिक्षण: स्मार्ट बोर्ड के माध्यम से शिक्षण, फ़्लिप्ड कक्षाओं के साथ शिक्षण, डेमोस्ट्रेशन के साथ शिक्षण, ओपन एंडेड प्रश्न पूछना, सहयोगात्मक शिक्षण। सीखना: सहभागी सीखना, मिश्रित सीखना, करके सीखना, भूमिका निभाना। मूल्यांकन: रूब्रिक, रचनात्मक मूल्यांकन, ऑनलाइन मूल्यांकन, योगात्मक मूल्यांकन करना।

शिक्षण में नवीन अभ्यास:

खुले प्रश्न पूछें- शिक्षक शिक्षण की एक विधि के रूप में खुले प्रश्न पूछ सकते हैं, जिससे शिक्षार्थियों को विषय पर अपने ज्ञान और समझ को व्यक्त करने का अवसर मिलेगा। सहयोगात्मक शिक्षण/टीम शिक्षण- यह दृष्टिकोण शिक्षकों को शिक्षार्थी के रूप में एक साथ लाता है, जिसका साझा लक्ष्य शिक्षार्थी के परिणामों में सुधार करना है। इसका ध्यान सामूहिक रूप से समस्या समाधान पर होता है। स्मार्ट बोर्ड के माध्यम से शिक्षण-शिक्षक शिक्षण को और अधिक नवीन बनाने के लिए विषय के अनुसार स्मार्ट बोर्ड का उपयोग कर सकते हैं। यह एक स्मार्ट तकनीक है जिसमें प्रोजेक्टर और स्कैनर के साथ टच कंट्रोल स्क्रीन होती है। फ़्लिप्ड क्लासरूम से शिक्षण- फ़्लिपिंग क्लासरूम में शिक्षक की भूमिका वीडियो, ऑनलाइन व्याख्यान, पॉडकास्ट, ई-बुक, वेबसाइट की मदद से शिक्षण को अधिक रोचक बनाना है। प्रदर्शन के साथ शिक्षण- यह शिक्षण पद्धति महत्वपूर्ण शिक्षण विधियों में से एक है जहाँ शिक्षक किसी विषय से संबंधित अमूर्त विचारों को मूर्त रूप देने के लिए चरण दर चरण प्रक्रिया दिखाता है। इससे सीखने में रुचि पैदा होती है और छात्र आसानी से सीख सकते हैं।

सीखने में नवीन अभ्यास: -

सहभागी शिक्षण- सहभागी शिक्षण सर्वोत्तम नवीन शिक्षण पद्धतियों में से एक है, जहां शिक्षार्थी किसी भी कार्य या शिक्षण गतिविधि में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेकर सीख सकता है।

मिश्रित शिक्षा- मिश्रित शिक्षा छात्रों में रुचि पैदा करती है। इसे मिश्रित या हाइब्रिड शिक्षा के रूप में भी जाना जाता है, जहाँ शिक्षार्थी आमने-सामने की शिक्षा के साथ-साथ ऑनलाइन शिक्षा के दोनों तरीकों से सीखते हैं। इन दोनों तरीकों के मिश्रण से सीखने की प्रक्रिया अधिक नवीन और उत्पादक बन जाती है।

करके सीखना- करके सीखना किसी चीज़ को सीखने का सबसे अच्छा तरीका है। इस तरह की शिक्षा से अनुभव मिलता है और सीखने वाला बिना किसी बोझ के आसानी से सीखता है।

भूमिका निभाना- भूमिका निभाने वाली शिक्षा में, शिक्षार्थी स्वयं के माध्यम से सीखता है। यहाँ शिक्षार्थी भाग लेता है और भूमिका निभाता है तथा संबंधित शिक्षण संदर्भ में खुद को शामिल करता है।

मूल्यांकन में नवीन अभ्यास:-

रचनात्मक मूल्यांकन- मूल्यांकन की इस प्रक्रिया में छात्रों को निरंतर तरीके से फीडबैक मिलता है जिससे उनकी शिक्षा में और वृद्धि होती है। रचनात्मक मूल्यांकन से संबंधित कई नवीन अभ्यास हैं जैसे प्रस्तुतिकरण, प्रश्न- उत्तर, निबंध लेखन, आश्चर्य परीक्षण, आदि।

योगात्मक मूल्यांकन- मूल्यांकन की यह विधि भी एक नवीन अभ्यास है और हम इसमें विभिन्न प्रकार के प्रश्न जैसे अति लघु, लघु, दीर्घ प्रश्नों के साथ-साथ कुछ वस्तुनिष्ठ प्रश्न जोड़कर इसे और अधिक नवीन बना सकते हैं। इस डिजिटल युग में ऑनलाइन कक्षाओं के कारण और प्रौद्योगिकी की उन्नति के

परिणामस्वरूप ऑनलाइन मूल्यांकन भी बहुत आवश्यक है। कई प्लेटफ़ॉर्म हैं जहाँ आप ऑनलाइन मूल्यांकन कर सकते हैं। ऑनलाइन मूल्यांकन के लिए इस्तेमाल किए जा सकने वाले अनुप्रयोग। ऑनलाइन प्रारंभिक मूल्यांकन के लिए कुछ नवीन उपकरण चित्र में दिए गए हैं।

कहूट: कहूट एक वैश्विक शिक्षण प्लेटफ़ॉर्म कंपनी है जो बच्चों, छात्रों और कर्मचारियों सहित सभी को सशक्त बनाना चाहती है, ताकि वे अपनी पूरी सीखने की क्षमता को अनलॉक कर सकें। यह किसी भी व्यक्ति या निगम के लिए आकर्षक जुड़ाव को बढ़ावा देने वाले शिक्षण गेम बनाना, साझा करना और खेलना आसान बनाता है। यह मुफ़्त और सशुल्क दोनों संस्करणों में उपलब्ध है। इसका उपयोग वास्तविक समय के प्रारंभिक मूल्यांकन, प्रश्नावली और कक्षाओं में चर्चा के लिए किया जाता है।

मेन्टीमीटर: यह एप्लीकेशन लाइव पोल, क्विज़, वर्ड क्लाउड, प्रश्न-उत्तर और बहुत कुछ के लिए उपयोगी है, ताकि ऑनलाइन वास्तविक समय में इनपुट प्राप्त किया जा सके। यह रिमोट और हाइब्रिड काम को आसान बनाता है।

पोल एवरीवेयर: यह एक ऐसा एप्लिकेशन है जो ऑनलाइन मीटिंग और कक्षाओं में सहायक है, इसके साथ कहीं भी अकेले इंटरैक्टिव मीटिंग की मेजबानी करें, यह वर्चुअल मीटिंग, कक्षाओं, घटनाओं के दौरान तुरंत फीडबैक कैप्चर करने के लिए भी उपयोगी है और एप्लिकेशन पर कई और सुविधाएं उपलब्ध हैं।

वूक्लैप: यह टूल छात्रों को उनकी पढ़ाई में भूमिका निभाकर सीखने की अनुमति देता है। यह प्रश्न उत्तर के माध्यम से घटना से संबंधित परिणाम का विश्लेषण करने और छात्रों को व्यक्तिगत रूप से प्रगति रिपोर्ट भेजने में मदद करता है।

क्विज़लेट: यह सॉफ्टवेयर गेम के ज़रिए शिक्षा देने के लिए बहुत उपयोगी है। क्विज़लेट विषयों और विषयों को तोड़ता है और उन्हें नए तरीके से प्रस्तुत करता है जिससे शिक्षार्थी को विषय और विषय को समझने और सीखने में आसानी होती है। यह फ़्लैशकार्ड और विभिन्न गेम और टेस्ट प्रदान करता है।

सोक्रेटिव: यह सॉफ्टवेयर मिश्रित शिक्षण कौशल को बढ़ाने में मदद करता है। यह सीखने की गति बढ़ाने और कक्षा में छात्रों की इंटरैक्टिव भागीदारी प्रदान करने के लिए उपयोगी है। यह निगरानी और मूल्यांकन के लिए एक कुशल तरीका है।

पीयर डेक: यह शिक्षकों को हर छात्र के लिए दैनिक आधार पर प्रभावी शिक्षण वातावरण बनाने में मदद करता है और रचनात्मक मूल्यांकन के माध्यम से छात्रों की सक्रिय शिक्षा का भी नेतृत्व करता है। यह आसानी से आकर्षक शिक्षण सामग्री बनाता है।

गो कॉन्कर: यह सीखने से संबंधित बहुत ही सरल टूल है। इसमें शामिल है। परीक्षण और स्कोरिंग के लिए योजना बनाना, विचार-मंथन करना और नोट करना छात्रों का प्रदर्शन, यहाँ हम एक ही जगह पर सब कुछ पा सकते हैं।

कुछ अन्य नवीन शिक्षण-अधिगम पद्धतियाँ इस प्रकार हैं:

1. सहयोगात्मक और सहकारी शिक्षण
2. चिंतनशील शिक्षण
3. आईसीटी उपकरणों का उपयोग
4. टेक्नो-पेडागॉजी
5. कार्यशाला और सेमिनार
6. सिमुलेशन
7. गेमीफिकेशन
8. क्रॉसओवर लर्निंग
9. दत्तक शिक्षण
10. गुप्त मूल्यांकन

1. सहयोगात्मक और सहकारी शिक्षा: सहयोगात्मक और सहकारी शिक्षा एक तरह का समूह या टीम सीखना है। इन नवीन शिक्षण प्रथाओं के माध्यम से छात्र एक समूह में सीखते हैं। इसलिए, ये प्रथाएँ विचारों के आदान-प्रदान और समाजीकरण की प्रक्रिया से संबंधित हैं।

2. चिंतनशील शिक्षण: यह अभ्यास प्रतिबिंबित करने में मदद करता है। पिछले ज्ञान को एक अभिनव तरीके से प्रस्तुत करना, जहां शिक्षार्थी को नई स्थिति में अपने ज्ञान को प्रतिबिंबित करने का मौका मिल सके।

3. आईसीटी उपकरणों का उपयोग: शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को बढ़ाने के लिए कई आईसीटी उपकरण उपलब्ध हैं। स्मार्टबोर्ड के माध्यम से शिक्षक छात्रों को कई शैक्षिक क्लिप, वीडियो, चित्र, पावर पॉइंट

प्रेजेंटेशन आदि दिखा सकते हैं, जिससे शिक्षण को सहायता मिलती है और साथ ही छात्र आसान और रोचक तरीके से नई अवधारणाएँ सीख सकते हैं। ये उपकरण ईमेल, सोशल मीडिया, ब्लॉग आदि के माध्यम से दुनिया को जोड़ने में भी सहायक हैं।

4. टेक्नो-पेडागॉजी: यह शिक्षण प्रथाओं को संदर्भित करता है जिसमें शैक्षणिक पहलू (शिक्षण और सीखने के तरीके, प्रेरणा, छात्रों के कौशल का विकास) और तकनीकी पहलू (कंप्यूटर, इंटरनेट, इंटरैक्टिव व्हाइटबोर्ड आदि का उपयोग करना) दोनों शामिल होते हैं। सामग्री या विषय वस्तु के संबंध में।

5. कार्यशाला और सेमिनार: कार्यशाला शिक्षकों और शिक्षार्थियों दोनों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करती है जहाँ वे किसी प्रकार का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करते हैं। सेमिनार विभिन्न विषयों को समझने में भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह छात्रों के प्रस्तुति कौशल को बढ़ाता है और विषय पर उनकी समझ भी बढ़ाता है। शिक्षक शिक्षा संस्थानों में इस प्रकार की नवीन प्रथाओं की भी आवश्यकता है।

6. सिमुलेशन- यह शिक्षार्थी के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने की एक तकनीक है। यह आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देता है।

7. गेमीफिकेशन - यह खेलों के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया है। यह खेल-खेल में सीखने की प्रक्रिया को बढ़ाता है। ऐसे कई एप्लिकेशन उपलब्ध हैं जो समस्या समाधान दृष्टिकोण और आलोचनात्मक सोच विकसित करने में मदद करते हैं। गेमीफिकेशन एप्लिकेशन के कुछ उदाहरण हैं बायजू, क्लास क्राफ्ट, कहूट इत्यादि।

8. क्रॉसओवर लर्निंग- संग्रहालयों और स्कूल के बाद के क्लबों जैसे अनौपचारिक सेटिंग में सीखना, शैक्षिक सामग्री को उन मुद्दों से जोड़ सकता है जो शिक्षार्थियों के जीवन में महत्वपूर्ण हैं। इसलिए यह शिक्षार्थियों को उनकी विविध सीखने की घटनाओं को रिकॉर्ड करने, जोड़ने, याद करने और साझा करने में मदद करता है।

9. अनुकूली शिक्षण- यह नई सामग्री शुरू करने के लिए सबसे अच्छे स्थानों की सिफारिश करता है और पुरानी सामग्री की समीक्षा कब करनी है। वे किसी की प्रगति की निगरानी के लिए विभिन्न उपकरण भी प्रदान करते हैं।

10. गुप्त शिक्षा- यह एक प्रकार की शिक्षा है जिसमें प्रशिक्षक छात्रों को मौज-मस्ती करने और सीखने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए खेल जैसे गैर-पारंपरिक साधनों के माध्यम से सीखने के उद्देश्यों को पेश करने के लिए चतुराईपूर्ण, प्रच्छन्न तरीकों का उपयोग करता है। छात्रों को लगता है कि वे केवल खेल रहे हैं, लेकिन वे साथ-साथ सीख भी रहे हैं।

शिक्षण में नवीन प्रथाओं का महत्व:

हम विभिन्न क्षेत्रों में इसकी भूमिका के माध्यम से नवीन प्रथाओं के महत्व को स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं जैसे निर्णय लेने की क्षमता, निर्णय शक्ति विकसित करने में सहायता प्रदान करना और निम्नलिखित तरीकों से व्यक्तियों के बीच सशक्तिकरण लाने में सहायक होना।

1. समस्या समाधान दृष्टिकोण विकसित करना- नवीन शिक्षण छात्रों के भीतर समस्या समाधान दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक होता है और उन्हें विभिन्न समस्याओं का सामना करने और उनके समाधान खोजने में सक्षम बनाता है।

2. चिंतनशील सोच में वृद्धि - नवीन अभ्यास शिक्षार्थियों के साथ-साथ शिक्षकों में भी चिंतनशील सोच को बढ़ाते हैं तथा उन्हें तर्क करने और निर्णय लेने में मदद करते हैं।

3.इंटरएक्टिव कक्षा- अभिनव शिक्षण पद्धतियाँ कक्षा को अधिक इंटरएक्टिव बनाती हैं। यदि कक्षा इंटरएक्टिव होगी, तो छात्र बेहतर तरीके से अधिक सीखेंगे।

4.प्रेरणा स्तर में वृद्धि शिक्षण में नवीन अभ्यास छात्रों में आत्मविश्वास और जिज्ञासा विकसित करके उनके प्रेरणा स्तर को बढ़ाता है।

5. स्व-शिक्षण को बढ़ावा देना- नवीन अभ्यास छात्रों की रुचि और इच्छा शक्ति को बढ़ावा देते हैं जो उन्हें स्व-शिक्षण की ओर ले जाता है।

नवीन शिक्षण-अधिगम प्रथाओं से संबंधित चुनौतियाँ:

संसाधनों की कमी: संसाधनों की अनुपलब्धता नवीन प्रथाओं के लिए एक बड़ी बाधा है। ऐसे कई स्कूल और शिक्षक शिक्षा संस्थान हैं जो पूरी तरह से प्रौद्योगिकी से सुसज्जित नहीं हैं और अन्य संसाधनों की भी कमी है।

प्रशिक्षण का अभाव: नवीन पद्धतियों के उपयोग के संबंध में शिक्षकों के लिए उचित प्रशिक्षण एक आवश्यक आवश्यकता है। लेकिन अधिकांश शैक्षणिक संस्थानों में प्रशिक्षण का अभाव है या अद्यतन नहीं है। इसलिए, नवीन दृष्टिकोणों के प्रभावी उपयोग के लिए समय-समय पर कार्यशालाओं, सेमिनारों या इससे संबंधित अन्य प्रशिक्षणों की आवश्यकता होती है।

अनुकूल वातावरण का अभाव: शिक्षण अधिगम के अभिनव अभ्यास के लिए अनुकूल वातावरण एक आवश्यक कारक है। पुस्तकालय की कमी, कक्षा में उचित बैठने की व्यवस्था का अभाव, तकनीकी उपकरणों की अनुपलब्धता आदि वातावरण को बाधित करते हैं, इसलिए बेहतर शिक्षण वातावरण बनाने के लिए व्यवस्थित व्यवस्था की आवश्यकता होती है।

जागरूकता की कमी: कभी-कभी हम शिक्षण के अभिनव अभ्यास के महत्व को नहीं समझते हैं। इसलिए, इस संबंध में जागरूकता भी आवश्यक है ताकि शिक्षार्थियों को शामिल किया जा सके और उनकी सीखने और कौशल को बढ़ाने में मदद मिल सके।

प्रेरणा की कमी: प्रेरणा भी एक महत्वपूर्ण कारक है। हम सभी जानते हैं कि प्रेरणा के बिना हम न तो कुछ सिखा सकते हैं और न ही सीख सकते हैं, इसलिए प्रेरणा गहन या व्यापक होनी चाहिए। सहयोग की कमी: बेहतर शिक्षण के लिए सहयोग होना आवश्यक है। यदि सहयोग की कमी होगी तो गुणवत्तापूर्ण शिक्षण-अधिगम पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

निष्कर्ष:

इसमें कोई संदेह नहीं है कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में नवीन पद्धतियाँ बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे बहुत प्रभावी हैं और किसी भी संस्थान की शैक्षिक प्रक्रिया में गुणात्मक परिवर्तन लाने में सक्षम हैं। शिक्षक शिक्षा संस्थानों के मामले में, ये नवीन पद्धतियाँ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता हैं क्योंकि वे भावी शिक्षकों को तैयार करती हैं जिनके माध्यम से समाज में शिक्षा का प्रसार किया जाएगा। लेकिन दूसरी ओर हम देखते हैं कि अभी भी नवीन प्रथाओं के उपयोग के दौरान कुछ बाधाएं हैं, इसलिए उन्हें कम करके या उन पर काबू पाकर हम समग्र विकास की अवधारणा के बारे में सोच सकते हैं।

सन्दर्भ:

1. फर्सवान, डी. सिंह. (2017). भारत में शिक्षक शिक्षा में नवीन अभ्यास. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करेंट रिसर्च, 9(4), 49593-49596. files.eric.ed.gov>fulltext ग्रेवाल, सरोज. (2016). शिक्षक शिक्षा में नवीन अभ्यास. रिसर्चपीडिया, 3(1), 39-45.
2. गुप्ता, पूजा. (2018). शिक्षक शिक्षा में नवाचार. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रीसेंट रिसर्च एस्पेक्ट्स, 964-966.
3. मानव संसाधन विकास मंत्रालय। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति: नई दिल्ली, https://डिग्री.एस्टेट.edu/articles/k-12-education/what-is- रिफ्लेक्टिव-टीचिंग.aspx
4. https://kahoot.com/home
5. https://www.mentimeter.com
6. https://www.polleverywhere.com

7. https://quizizz.com
8. https://www.wooclap.com
9. https://quizlet.com
10. https://www.socrative.com
11. https://www.peardeck.com/googleslides
12. https://www.goconqr.com/en/features